मालवीय प्रकाश

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष -7 | अंक - 14 | जयपुर | जून-अगस्त 2026 | पृष्ठ संख्या - 1



निदेशक की कलम से ...



आचार्य (डॉ.) नारायण प्रसाद पाढी

निदेशक- मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर के समस्त विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, पूर्व छात्रों एवं शुभचिंतकों से मालवीय प्रकाश के माध्यम से पुनः संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल हमारे संस्थान की गतिविधियों का संकलन नहीं, बल्कि हमारी शैक्षणिक संस्कृति, वैचारिक प्रतिबद्धता और राष्ट्रनिर्माण के संकल्प की अभिव्यक्ति है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि विवेक, उत्तरदायित्व और चरित्र का निर्माण भी है। हमारा संविधान हमें न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व के जिन आदर्शों का मार्ग दिखाता है, वे उच्च शिक्षा संस्थानों की भी आधारशिला हैं। एक उत्कृष्ट शिक्षण संस्थान वही है जो विद्यार्थियों को केवल दक्ष अभियंता या वैज्ञानिक ही नहीं, बल्कि संवेदनशील, नैतिक और उत्तरदायी नागरिक भी बनाए। यह विचार हमारे संस्थान की प्रत्येक शैक्षणिक, अनुसंधान एवं नवाचार गतिविधि का मूल आधार है।

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर आज शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्रों में निरंतर प्रगति कर रहा है। राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रैमवर्क में प्राप्त उल्लेखनीय स्थान, अनुसंधान एवं नवाचार की सुदृढ़ संस्कृति, उद्योग एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ बढ़ते सहयोग, भारतीय ज्ञान परंपरा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऊर्जा, सतत विकास तथा उभरती प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में हमारे प्रयास इस बात के प्रमाण हैं कि संस्थान अपने मिशन और विजन को सार्थक रूप से आगे बढ़ा रहा है।

मालवीय प्रकाश का प्रत्येक अंक संस्थान की उपलब्धियों का दर्पण होने के साथ-साथ भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के कृतित्व, व्यक्तित्व और उनके शिक्षा-दर्शन का स्मरण भी कराता है। उनके द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रसेवा, चरित्र निर्माण, भारतीय संस्कृति और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के समन्वय का आदर्श आज भी हमारी प्रेरणा का स्रोत है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका संस्थान परिवार को एक वैचारिक सूत्र में जोड़ते हुए संवाद, सृजन और उत्कृष्टता की संस्कृति को और सुदृढ़ करेगी।

मैं संस्थान के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपेक्षा करता हूँ कि हम सभी ज्ञान, नवाचार, नैतिकता और सेवा की भावना को अपने जीवन का आधार बनाते हुए मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर की प्रतिष्ठा को नई ऊँचाइयों तक ले जाने तथा विकसित भारत के निर्माण में अपना सर्वोत्तम योगदान देने का संकल्प लेंगें।

आचार्य (डॉ.) नारायण प्रसाद पाढी

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय एक विलक्षण व्यक्तित्व

अपनी योग्यता का उचित प्रयोग
अयोग्य को योग्य बनाने में है।
मदन मोहन मालवीय

सात्त्विक सार्वजनिक जीवन

निष्काम भाव से अनुप्राणित मालवीयजी के कार्य का ढंग भी निराला था। वे सदा सार्वजनिक कामों में लगे रहते, और उन सबको बड़े पैमाने पर करते थे। पर जैसा कि पुरुषोत्तम दास टंडनजी ने बताया, ''यश की उन्हें चाह नहीं थी'', वे ''काम स्वयं करते थे, पर कीर्ति और यश के लिए दूसरों को आगे कर देते थे। वे दूसरों की समाजसेवा का आदर करते, और समाज की सेवा में उनकी हिम्मत बढ़ाते थे। अपने साथियों पर वे सदा विश्वास करते, उनके प्रति सद्भावना रखते, और उनके सहयोग और परामर्श की कद्र करते थे । उनका बहुत-सा समय साथियों के साथ विचार-विमर्श में ही खर्च होता था । वे छोटों की बात को भी धीरज और ध्यान से सुनते, और उनकी बतायी अच्छी बात को खुशी-खुशी ग्रहण करते, और उसके लिए उनकी सराहना करते थे । वे समाज सेवकों के यश से खुश होते थे, और सबके साथ मिलकर काम करते थे। वे सात्त्विक विरोध का आदर करते, पर बेकार के कटाक्ष और तिरस्कार की उपेक्षा करते थे। वे वितंडावाद से कोसों दूर भागते थे। किसी की निन्दा करना या किसी के अपयश का बखान करना वे बुरा समझते थे। वे विपक्षी के साथ भी प्रेम, धैर्य और नम्रता से बात करते, विरोधियों के अपशब्द को करुणा और सौहार्द मालवीयजी के जीवन के जौहर थे । अपने

एक अनमोल शख्सियत

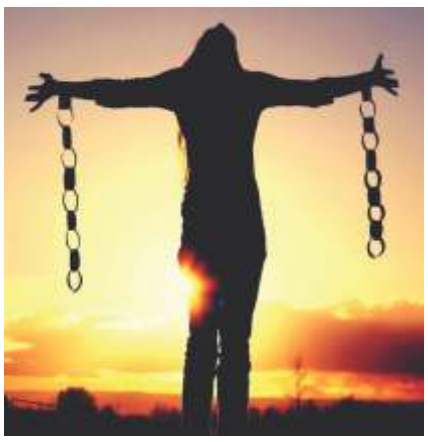


महामना पंडित मदन मोहन मालवीय

भृत्यों और पार्श्वतियों के प्रति भी उनका व्यवहार कोमल, मधुर और अनुग्रहपूर्ण होता था । वे बहुत कष्ट सहते हुए भी अपने नौकरों के आराम का ध्यान रखते, तथा अपने कारण उन्हें कष्ट नहीं होने देते थे । इस सम्बन्ध में पण्डित रामनरेश त्रिपाठी ने बताया कि एक बार पटना के प्रसिद्ध वैद्य पंडित व्रजबिहारी चौबेजी ने मालवीयजी को एक काढ़ा पीने की सलाह दी। उसे तैयार करके ठीक समय पर पिलाने के लिए नौकर को प्रातःकाल चार बजे उठना पड़ता था । उसे इतना कष्ट देना अनुचित समझ मालवीयजी ने काढ़ा पीना ही बन्द कर दिया। जब दस-पन्द्रह दिन के बाद नौकर को कारण का पता चला, तब उसने उसका प्रबन्ध किया।

शेष पृष्ठ 2 पर...

अधूरी आज़ादी



कहा जाता है - हम आज़ाद देश में जीते हैं, पर हर स्त्री जानती है - आजादी के अर्थ अब भी अधूरे हैं। आज़ादी केवल सीमाओं का विस्तार नहीं, यह अपने जीवन की दिशा स्वयं तय करने का अधिकार है।

जब कोई लड़की देर से घर लौटती है, सवाल दरवाजे पर खड़े मिलते हैं - 'इतनी देर क्यों हुई?' और उसी राह से उसका भाई लौटे अगर, स्वर बदल जाता है- 'खाना खाया थक गए होंगे' बस इतनी-सी बात बता देती है - बराबरी अब भी शब्दों में है, जीवन में नहीं। स्त्री को आज़ादी विद्रोह के लिए नहीं चाहिए, उसे चाहिए एक साधारण जीवन जीने के लिए - बिना स्पष्टीकरण, बिना संदेह, बिना शर्तों के।

उसे आजादी चाहिए - अपनी पढ़ाई चुनने की, अपने सपनों को बुनने की, अपने कैरियर को गढ़ने की, अपनी पहचान को सुनने की। उसे आज़ादी चाहिए - अपना जीवन साथी चुनने की, अपने मन से जीने की, और कभी-कभी कुछ भी न चुनने की भी स्वतंत्रता होने की।

आज की लड़की आसमान छू रही है, पर उसके पंखों से अब भी सवाल बाँध दिए जाते हैं। कल्पना चावला अंतरिक्ष तक पहुंचीं, दिर भी कितनी बेटियों से पूछा जाता है - 'इतना पढ़कर क्या करोगी?' मेरी कॉम ने विश्व जीता, फिर भी सुनना पड़ता है - 'इतनी लड़कों जैसी मत बनो।'

किरण बेदी ने वर्दी पहनी, फिर भी कितनी लड़कियों से कहा जाता है-'घर संभालना ही तुम्हारा असली काम है।' समस्या यह नहीं कि स्त्री कमजोर है, समस्या यह है कि समाज अब भी उसकी उड़ान से अपरिचित है। जब तक प्रश्न केवल स्त्री से ही पूछे जाएंगे, आजादी आधी ही रहेगी और जिस दिन चयन का अधिकार सचमुच समान होगा, उस दिन - आजादी का अर्थ पूर्ण होगा।

रुचिका
- शोधार्थी मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग

इस अंक में ...

विवरण	पृष्ठ संख्या
निदेशक की कलम से	1
महामना - एक विलक्षण व्यक्तित्व	1
सम्पादकीय	1
अधूरी आज़ादी	1
मेरा सफ़र	2
मेरे गाँव के खेत	2
संघर्ष की अनिवार्यता	2
आत्मनिर्भर भारत और कृत्रिम बुद्धिमता	2
कार्य को हमेशा सकारात्मक ऊर्जा	2
एक पाजामा	3
त्याग की भावना रखिये	3
महापुरुषों की प्रेरणा में युवा भारत	3
साँच को क्या आँच है	3
अजब विडंबना है	3
सफल जीवन	4
पिता से भूल	4
भारतीय दृष्टि में नारी	4
बचपन और सपने	4
ग़मे ज़िदगी	4

सम्पादकीय...

प्रिय पाठकों,

सादर अभिवादन,

सर्वप्रथम गतांक में आप लोगों की उत्साह जनक सक्रिय साझेदारी के लिए हृदय से कृतार्थ हूँ। ''मालवीय प्रकाश'' के संस्करणों के लिये भेजी गई रचनाओं की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है जो कि अत्यंत हर्ष का विषय है, फिर भी हिन्दी भाषा में लेखन अभी इस स्तर पर नहीं देखने को मिल रहा है जितना हिंदी को मातृभाषा का दर्ज़ा दिये जाने के बावजूद होना चाहिये।

इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे विदेशी भाषाओं विशेषकर अंग्रेजी भाषा का दैनिक बातचीत में बढ़ता हुआ उपयोग, शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी होना, सामाजिक स्तर पर अंग्रेजी भाषा की जानकारी के आधार पर व्यक्ति की प्रतिभा का मूल्यांकन करना और उन्हें नौकरियों में तवज्जो देना। समाज में हिन्दी विरोधी मानसिकता को बल देना तथा हिंदी भाषी जन को पिछड़ा या हेय दृष्टि से देखना यानि कि उन्हें कमतर आंकना। वस्तुओं, विचारों एवं शिक्षा का वैश्वीकरण होना, इसके अतिरिक्त दुनियाँ में कुछ चुनिंदा देशों को छोड़कर अंग्रेजी भाषा को वैश्विक भाषा के रूप में उपयोग में लाया जाना। हिन्दी भाषा को उचित सम्मान दिलाने का उत्तरदायित्व हम भारतीयों का है, या सभी उन देशों में जहां हिन्दी बोली या पढ़ी जाती है। इसके लिये हमें हर विषय के ज्ञान को ज्यादा से ज्यादा हिन्दी भाषा में पुस्तकों के माध्यम से उपलब्ध कराना चाहिये। पुस्तकों को पढ़ने से न केवल अभिव्यक्ति व भाषा समृद्ध होती है बल्कि सोचने की ताकत तथा किसी की पीड़ा व सुख समझने और महसूस करने की क्षमता भी बढ़ती है। किताबें पीढ़ियों का पुल है जिससे हम अपनी संस्कृति की जड़ों से जुड़े रहते हैं।

आज के समय में सबसे मूलभूत ज़रूरत है हर वर्ग की किताबें पढ़ने की आदत को पुनर्जीवित करना। आज का युग डिजीटल युग है इसकी वजह से ई-बुक्स पढ़ी जा रही है या वीडियो या ऑडियो के जरिये विषय वस्तु को समझा जा रहा है। सामान्यजन एवं विद्यार्थीयों में भी पुस्तकें पढ़ने की आदत तेजी से कम हो रही है। ज्ञान व मनोरंजन प्राप्त करने के लिये दोनों के मध्य एक तालमेल बैठाना होगा। ज्यादातर पुस्तकालयों में रखी किताबों पर धूल जमी रहती है। पुस्तकें न पढ़ने से हमारी किसी भी काम में ध्यान देने की क्षमता कम हो रही है। किताबें पढ़ने से हम धैर्य रखना सीखते हैं, भाषा पर पकड़ बढ़ती है जिससे हमारी अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है तथा किताबें हमें अकेले बैठने का सुकून भी देती है। जो समाज पढ़ना छोड़ देता है वो सोचना छोड़ देता है। डिजिटल मीडिया से सिर्फ सूचनायें मिलती हैं और केवल सूचनाओं से ना तो जीवन की गुणवत्ता ही बढ़ती है और ना ही मुश्किलों में आगे बढ़ने का हौसला मिलता है। युवा पीढ़ी जो देश का भविष्य है उनकी रूचि के विषयों पर अच्छी पुस्तकें लिखी जाने की जरूरत है। अभिभावक व शिक्षक स्वयं किताबें पढ़ें और विद्यार्थीयों के सामने एक जीवित उदाहरण बनें व उन्हें प्रेरित करते रहें। अगली पीढ़ी में नेतृत्व क्षमता उत्पन्न करने के लिये पुस्तकों को पढ़ना अति आवश्यक है। तकनीकी ज्ञान से हमारा सम्पूर्ण बौद्धिक विकास नहीं हो पाता है, हम मशीन ही बनते हैं, इंसान बनने के लिए तो पुस्तकें पढ़ने की ही जरूरत है।

सस्नेह, आपकी शुभाकांक्षी

भवदीया,

आचार्य (डॉ.) ज्योति जोशी

सम्पादिका एवं आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर

Mobile : 9413971604, 9549654852 | malaviyaprakash.lokmat@gmail.com | jjoshi.chy@mnit.ac.in

पेज नं. 1 का शेष

मालवीय एक विलक्षण व्यक्तित्व

रामनरेशजी के एक प्रश्न के उत्तर में मालवीयजी ने उनसे कहा कि ''रामनरेशजी, हम तो गरीब आदमी हैं। इससे गरीब के प्रति हमारी सहानुभूति स्वाभाविक है। नौकरों को मैं कुटुम्ब से भिन्न नहीं समझता । मेरे यहाँ नौकर के साथ जैसा व्यवहार होता है, वैसा धनी परिवारों में भी नही होता। रामनरेशजी ने स्वयं लिखा है'' मुझे घूमने का तो बहुत मौका मिला है, और मेरा परिचय राजा से लेकर साधारण गृहस्थ तक प्रायः हरेक श्रेणी और हरेक सुरुचि के लोगों से है, पर नौकरों के प्रति जैसी आत्मीयता मैंने मालवीय जी में देखी, वैसी यहां के पहले कहीं देखी नहीं थी । प्रायः अधिकांश मालिक अपने नौकरों के प्रति उदासीन और कहीं-कहीं क्रूर दिखाई पड़े और कहीं तो नौकर ही मालिक बन बैठे हैं। पर यहाँ स्वामी और नौकर का अद्भुत् ही रूप देखा''

मालवीयजी के सुपुत्र गोविन्दजो ने एक बार डाक्टर आनन्द कृष्ण को एक साधारण पड़ोसी के प्रति मालवीयजो के सौहार्द और करुणा की एक अद्भुत् बात बतायी । गोविन्दजी ने बताया कि जब मालवीयजी भारती भवन में रह कर ही वकालत करते थे, तब एक सज्जन जो बगल में रहते थे अपना मकान बेचने के लिए मालवीयजी के पास आये। पर उन्होंने मकान खरीदने के बजाय उसे कुछ रुपये उधार दे दिये । व्यापार में अधिक घाटा हो जाने के कारण उस पड़ोसी को अपना मकान मालवीयजीके हाथ बेचना ही पड़ा। फिर भी मालवीय जी ने उस मकान पर अपना अधिकार न जमा कर उसे उसके पुराने मालिक के कब्जे में रहने दिया। पर पड़ोसी को यह बात ठीक नहीं लगी। उसने मकान खालो करके मालवीयजी को उसका कब्जा देने की ठान ली। उसके आग्रह पर कब्जे की तिथि निश्चित हो गयी । तब मालवीयजी की धर्मपत्नी मकान देखने गयीं । वहाँ उन्होंने देखा कि एक स्त्री सामान बांधती जा रही है, साथ-साथ रोती भी जा रही है। रोने का कारण पूछने पर उसने बताया कि ''बहिन, अपना घर है, छोड़ते दुःख होता है''। जब धर्मपत्नीजी ने मालवीयजी से इसकी चर्चा की, तब उन्होंने मकान के पुराने मालिक को बुलाकर कहा कि तुम्हारा मकान तुम्हारे पास ही रहेगा। इस पर उसने इनकार किया, पर मालवीयजी टस से मस नहीं हुए और मकान उसके पास ही बना रहा। मालवीयजी की करुणा नौकरों और पड़ोसियों तक ही सीमित नहीं थी। सभी गरीब समान रूप से उसके अधिकारी थे। उनके घर पर दीन-दुःखियों की भीड़-सी लगी रहती थी। उन सबके लिए उनका दरबार सदा खुला रहता था। उन्हें उनके पास आने से कौन रोक सकता था ? यदि उनका कोई पुत्र रोकने का प्रयत्न करता, तो वे कहते कि जब तक वे इस घर में हैं, तब तक तो दीन-दुःखों इस घर में आयेंगे ही। यदि बाबू शिवप्रसाद गुप्त कमरे पर पहरा लगा देते या स्वयं पहरा देने लगते, तो मालवीयजी पेड़ के नीचे जाकर बैठ जाते, और वहाँ सबसे मिलने लगते । आखिर इन सब पहरेदारों को हार माननी पड़ती । ऐसा लगता था मानों उन्होंने गजेन्द्रमोक्ष की कथा को अपने जीवन में पूरे तौर पर चरितार्थ कर लिया था। यदि उनके सामने कोई असह्य संकट उपस्थित होता, तो वह गजेन्द्र की तरह विलाप करते हुए उससे छुटकारे के लिए भगवान् से प्रार्थना करते, और वे स्वयं कृष्ण की तरह दुःखियों के कष्टों को दूर करने के लिए दौड़ते फिरते। उनका सारा जीवन इस प्रकार की घटनाओं से भरा पड़ा है।

बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन ने अपने संस्मरण में लिखा है कि ''प्रयाग में गंगा तट पर माघ का मेला था। कड़ाके की सर्दी थी। रात का समय था । पानी बरसने वाला था जिसके कारण बहुत से साधनहीन यात्रियों को बड़ा कष्ट होने की सम्भावना थी । बस, मालवीयजी टण्डनजी को लेकर टाल पर पहुँचे, लकड़ियाँ खरीदीं, कुछ उन्होंने अपने कन्धे पर रखीं और अपने दूसरे साथियों की सहायता से बहुत-सी लकड़ियाँ मेले में ले जाकर वे ''साधुओं के यहाँ, गरीबों के यहाँ, जिनके पास सहारा नहीं था, उनको बाँटने लगे।'' इसी तरह एक दूसरे अवसर पर माघ मेले में ही जैसे ही मालवीयजी खाना खाने बैठे थे कि उन्हें मेले में आग लगती दिखाई दी। वह तुरत ही धोती पहने ही आग बुझाने दौड़ पड़े। इस भावना से अनुप्राणित मालवीयजी सन् 1919 में पंजाब हत्याकाण्ड के तुरत बाद पंजाब गये और वहाँ उन्होंने कई मास दुःखी जनता की सेवा की, उन्हें ढाडस बँधाया, साहस प्रदान किया ।

स्वामी श्रद्धानन्दजी ने अपने संस्मरण में लिखा कि सन् 1919 में अमृतसर कांग्रेस के अवसर पर एक दिन इतनी वर्षा हुई कि प्रतिनिधियों को तम्बुओं में नहीं टिकाया जा सका। उनका प्रवन्ध नगर-निवासियों के घरों में करना पड़ा, और उन्हें स्टेशन से घरों में पहुँचाते-पहुँचाते दो बज गये। इस अवसर पर ''रेलवे पर हमारे विनम्र और सीधे सादे नेता पण्डित मदन मोहन मालवीय बराबर बने रहे, भूख-प्यास की चिन्ता न कर एक घोड़े की तरह उस समय तक काम करते रहे, जब तक कि अन्तिम मेहमान भी अपने नियत स्थल पर रवाना नहीं हो गया।''

1. उच्चकोटि के वक्ता : मालवीयजी ''अद्वितीय वक्ता'' थे। उनके भाषणों में जैसा कि सच्चिदानन्द सिन्हा ने बतायाः ''अनमोल वाक् शक्ति के साथ-साथ प्रभावकारी माधुर्य और गम्भीरता का अनुपम सम्मिश्रण रहता था।'' वे सदा व्यक्तिगत कटाक्ष से निर्मुक्त तथा युक्तियुक्त विचारों, सद्भावनाओं और सदादर्शों से परिपूर्ण होते थे। ऐतिहासिक तथ्यों और प्रमाणों से परिपुष्ट, तथा साहस और सौजन्य, विवेक और मनुष्यता, करुणा और शौर्य, एवं युक्तियुक्त तर्क और भाषा की पवित्रता से अलंकृत उनके बहुत से भाषण वाग्मिता के उच्च उदाहरण थे।

आचार्य (डॉ.) ज्योति जोशी

शेष अगले अंक में

आत्मनिर्भर भारत और कृत्रिम बुद्धिमता



कृत्रिम बुद्धिमता एक ऐसी तकनीक है जिसने आज लगभग हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है चाहे चिकित्सा हो या शिक्षा या अन्य कोई क्षेत्र। पर आज हम 2026 में जी रहे हैं जब कृत्रिम बुद्धिमता कोई मात्र अनुमानों पर आधारित तकनीक नहीं रह गयी क्योंकि अब इसके परिणाम दुनिया के सामने आने लगे हैं। हाल ही में आपने अन्थ्रोपिक कंपनी के क्लौड म्थोस के बारे में भी सुना होगा जिसका दावा है कि वो दुनिया के किसी भी सॉफ्टवेयर में गलतियाँ निकाल कर दे सकता है। मैकिंजी एंड कंपनी की भी एक रिपोर्ट में सामने आया है की अब लगभग 88 प्रतिशत कंपनियों में किसी ना किसी रूप में कृत्रिम बुद्धिमता का इस्तेमाल किया जा रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमता से जुड़ी प्रमुख चुनौतियाँ :-

कृत्रिम बुद्धिमता के विकास के साथ ही इसमें कई चुनौतियाँ भी उभर कर आई है। सबसे बड़ी चुनौती है इसके कार्यान्वयन में अत्यधिक बिजली एवं जल का उपयोग होना और भारत जैसे देश में जहां आज भी घर तक बिजली और पानी पहुंचना भी एक चुनौती हो वहा इतना बिजली और पानी ला पाना स्पष्ट रूप से मुमकिन नहीं होगा। सरकारें और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ अब हार्डवेयर (जैसे चिप्स, जीपीयू) और सॉफ्टवेयर को दूसरे देशों को भेजने पर कई नियम लागू करती जा रही है जिसके वजह से अब इस तकनीक को छोटे और विकासशील देशों द्वारा पाना और भी कठिन हो गया है। तीसरी और सबसे बड़ी चुनौती है इसके विनियमित करना और समाज के अंतिम वर्ग तक इसे पहुँचना। इतना ही नहीं अब कृत्रिम बुद्धिमता को एक रणनीतिक संपत्ति की तरह भी देखा जाने लगा है।

भारतीय संदर्भ में कृत्रिम बुद्धिमता का विकास और उसकी दिशा : संसाधनों की कमी की वजह से भारत के लिए बड़े कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) मॉडल बनाना मुमकिन नहीं है। सिर्फ भारत में ही दुनिया भर में अब इन बड़े मॉडलों की वजह से होने वाली समस्याएं सामने आने लगी है। इन सब से सीख लेते हुए भारत को अब फ्रुगल एआई की ओर जाना होगा। यह एक ऐसे प्रकार की विकास प्रणाली है जिसमें एक बड़े मॉडल की जगह कई छोटे और कार्य विशिष्ट एआई मॉडलों को विकसित कर उनका उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार स्वामित्व सॉफ्टवेयर की जगह ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल भी बढ़ाया जा सकता है क्योंकि भारत पहले ही ओपन सोर्स में अग्रमी भूमिका निभाता आया है। हमारे देश में अनेक प्रकार की विविधताऐं होने की वजह से हमारे पास एआई मॉडलों को अनेक प्रकार के डेटा सेट पर प्रशिक्षित युवा है, जिससे वह आज खुद को दुनिया के ''आईटी बैक ऑफिस'' से ''एआई फ्रंट ऑफिस '' में बदल सकता है। एआई सुरक्षा को विनियमित करने और इसे सभी के लिए सुरक्षित बनाने के लिए इस बार के आर्थिक सर्वेक्षण में दो परिषदों का जिक्र मिलता है एआई सुरक्षा परिषद और एआई अर्थिक परिषद। इन परिषदों का मुख्य काम ही होगा एआई को सुचारू रूप से विनियमित करना और साथ ही एआई के विनियम व नवाचार में संतुलन बिठाना। अंत में मैं बस जय प्रकाश नारायण जी के द्वारा दिया गया नारा दोहराना चाहता हूँ जो कृत्रिम बुद्धिमता (एआईई) के सन्दर्भ में भी उपयुक्त बैठता हैः **''संपूर्ण क्रांति अब नारा है भावी इतिहास हमारा है।''**

– उदीप्त सैनी
शोद्यार्थी तृतीय वर्ष (6वाँ सेमेस्टर) सीएसई

कार्य को हमेशा सकारात्मक ऊर्जा के साथ करना चाहिए

एक समय की बात है, एक महात्मा एक गांव से गुजर रहे थे। वहाँ धूप में कुछ मजदूर हथौड़े से भारी भारी पत्थर तोड़ रहे थे। महात्मा ने सोचा कि क्यों न इन मजदूरों से बात करके जाना जाए कि वे अपने काम के बारे में क्या सोचते हैं। महात्मा पहले मजदूर के पास गया और उससे पूछा, ''भाई, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'' पहला मजदूर बहुत गुस्से में था। उसने झुंझलाकर कहा, ''दिखाई नहीं देता? अपनी फूटी किस्मत को रो रहा हूँ और ये पत्थर तोड़ रहा हूँ। सुबह से शाम तक इस तपती धूप में मेहनत करनी पड़ती है, तब जाकर दो वक्त की रोटी मिलती है। यह भी कोई जिंदगी है!'' महात्मा चुपचाप आगे बढ़ गया। उसने दूसरे मजदूर से वही सवाल पूछा, ''भाई, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'' दूसरा मजदूर शांत था, लेकिन उसके चेहरे पर कोई खुशी नहीं थी। उसने उदासीनता से कहा, ''मैं यहाँ मजदूरी कर रहा हूँ। इस काम से मुझे रोज के पैसे मिल जाते हैं, जिससे मेरा और मेरे परिवार का पेट पलता है। बस इसीलिए यह काम कर रहा हूँ।'' महात्मा थोड़े और आगे बढ़े, जहाँ तीसरा मजदूर काम कर रहा था। वह भी वही भारी पत्थर तोड़ रहा था, लेकिन वह मस्ती में गुनगुना रहा था और उसके चेहरे पर एक गजब का संतोष और चमक थी। मूर्तिकार ने उससे भी वही सवाल किया, ''भाई, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'' तीसरे मजदूर ने मुस्कुराते हुए ऊपर देखा और गर्व से कहा, ''मैं एक भव्य और सुंदर मंदिर का निर्माण कर रहा हूँ! आज जो पत्थर मैं तोड़ रहा हूँ, कल इन्हीं पत्थरों से भगवान की मूरत और मंदिर की दीवारें बनेंगी, जहाँ हजारों लोग प्रार्थना करने आएंगे। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे इस पवित्र काम में योगदान देने का मौका मिला है। तीनों मजदूर एक ही जगह पर, एक ही धूप में, एक जैसा ही भारी काम कर रहे थे। लेकिन तीनों का अपने काम को देखने का नजरिया बिल्कुल अलग थाः पहला मजदूर अपने काम को एक बोझ मान रहा था, इसलिए वह दुखी और हताश था। दूसरा मजदूर अपने काम को सिर्फ एक मजबूरी (पेट भरने का जरिया) मान रहा था, इसलिए वह संतुष्ट तो था लेकिन उसमें कोई उत्साह नहीं था। तीसरा मजदूर अपने काम में एक बड़ा उद्देश्य देख रहा था। वह देख पा रहा था कि उसका छोटा सा काम कैसे एक महान निर्माण का हिस्सा बन रहा है, इसलिए वह बेहद खुश और ऊर्जावान था।

संकलन कर्ता– डॉ. मिनी भार्गव
एम.एन.आई.टी., औषधालय

संघर्ष की अनिवार्यता



युद्ध नहीं जिनके जीवन में
वे भी बहुत अभागे होंगे
या तो प्रण को तोड़ा होगा
या फिर रण से भागे होंगे
दीपक का कुछ अर्थ नहीं है
जब तक तम से नहीं लड़ेगा
दिनकर नहीं प्रभा बाँटेगा
जब तक स्वयं नहीं धधकेगा
कभी दहकती ज्वाला के बिना
कुंदन भला बना है सोना
बिना घिसे मेहंदी ने बोलो
कब पाया है रंग सलोना
जीवन के पथ के राही को
क्षण भर भी विश्राम नहीं है
कौन भला स्वीकार करेगा
जीवन एक संग्राम नहीं है।।

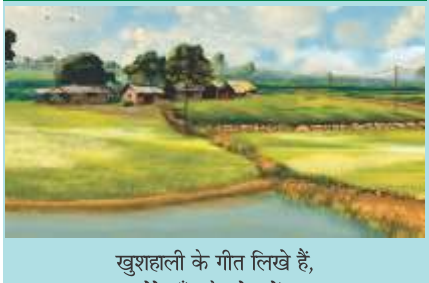
– अमित सोलंकी
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, एम.एन.आई.टी., जयपुर

मेरा सफर

छोटी-छोटी आँखों में बड़े - बड़े ख्वाब,
बड़ी होकर बनूँगी मै भी कलेक्टर साहब।
सरकारी गाडी बंगला और नौकर-चाकर,
असली खुशी तो मिलेगी पावर पाकर।
खरीद लाई मैं मोटी से मोटी किताबे,
दिन में पढाई और ख्वाबों में कटती है रातें।
बारहवीं तक जो लड़की थी जस्ट पास,
पता नई कैसे उसे अब पढाई आ रही रास।
पता नहीं लगता पढ़ने में
समय कैसे बीता जा रहा है,
ताज्जुब होता है अब तो पढाई में
भी मजा आ रहा है।
किसी ने कहा फ्रिक
नहीं होती की नहीं हुआ तो?
मैंने कहा अब पीछे क्या
हटना जब ठान लिया तो।
सच कहुँ तो अब मुझे
रिजल्ट का डर नहीं सताता,
मेरे मन को तो बस ये
खूबसूरत सफर ही है भाता।
मैने तो यही पाया है की मिलती होगी मंजिल
से खुशी, लेकिन सफर में मिलता है सुकून
सफर से मिलती है संतुष्टि।

– कर्ण अग्रवाल
बी.टेक, चतुर्थ वर्ष, ई.सी.ई.

मेरे गाँव के खेत



खुशहाली के गीत लिखे हैं,
मेरे गाँव के खेत में।
पायल संग कुदाली चलती
मेरे गाँव के खेत में।
पानीदार कुओं पर चलते
रहटों की आवाज जहाँ।
धानी धरती के कणकण को
धोरों की सौगात वहाँ ।
हरियाली ले फसल खड़ी है,
मेरे गाँव के खेत में।
खुशहाली के गीत लिखे हैं
मेरे गाँव के खेत में।
यहाँ नीम की डाल बैठी
चिड़िया चहकचहक कर गाती है।
कभी धूल में नहानहा कर
बादल का संदेश सुनाती है।
वया घास के महल बनाती
मेरे गाँव के खेत में।
खुशहाली के गीत लिखे हैं
मेरे गाँव के खेत में।
काली, पीली, दोमट, मिट्टी
फसलें कई उगाती है,
बिन बोले ही घास रूप में
अपना प्यार लुटाती है।
सनसन हवा बहे मतवाली
मेरे गाँव के खेत में,
खुशहाली के गीत लिखे हैं
मेरे गाँव के खेत में।

– शुधांशु अवस्थी
(2025PMA5415)

एक पाजामा



एक गांव में जिद्दीराम पिद्दीराम नाम के दो भाई रहते थे। दोनों भाई अव्वल दर्जे के मूर्ख व बातूनी थे। घर की हालत खस्ता होने के बावजूद भी वह दोनों कुछ नहीं करते थे। दिन-रात एक दूसरे पर दोष लगाकर झगड़ते रहते पर काम के लिए हिलने का नाम न लेते।

धीरे-धीरे घर की जरूरतें पूरी करने के लिए उन्होंने घर का सामान एक-एक करके बेच दिया। अब पहनने के नाम पर सिर्फ एक पाजामा बचा था। दोनों में से जब कोई भाई बाजार जाता तब वह पाजामा पहन लेता और वापस आकर बड़ी हिफाजत से उसे उतार कर रख देता। दोनों भाई बारी-बारी से उस पाजामे का इस्तेमाल कर रहे थे।

उस गांव के जमींदार की एक ही बेटी थी। वह अकसर बीमार रहती थी। जिसके कारण उसने हंसना छोड़ दिया था। वैद्यों की राय में स्वस्थ रहने के लिए हंसना जरूरी था। जमींदार ने बहुत से मसखरों की सहायता ली परन्तु हंसना तो दूर जमींदार की लड़की मुस्कराती तक न थी।

एक दिन जमींदार ने सारे गांव में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो भी व्यक्ति लड़की को हंसाएगा वह मुंह मांगा इनाम पाएगा।

खबर सुन एक दिन मसखरों, नटों व बहरूपियों की भीड़ जमींदार की कोठी पर लग गई। वे अपना-अपना खेल दिखाने लगे।

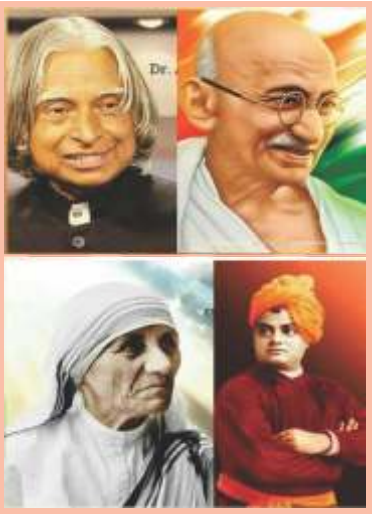
जिद्दीराम व पिद्दीराम के मन में मसखरों के करतब देखने की इच्छा उठी। लेकिन समस्या थी पाजामे की। क्योंकि पाजामा एक था। आखिर काफी देर बहस व लड़ाई-झगड़े के बाद तय हुआ कि दोनों एक साथ पाजामा पहन कर तमाशा देखने जाएंगे। काफी सोच विचार के बाद पाजामे के दाहिने हिस्से में पिद्दीराम ने अपनी दोनों टांगें घुसाईं व बाएं हिस्से में जिद्दीराम ने। दोनों भाई गिरते-पड़ते जमींदार की कोठी पर पहुंचे।

कोठी के सामने मंच पर जमींदार अपनी बेटी के साथ बैठा तमाशा देख रहा था। तभी जमींदार की बेटी की नजर इन भाइयों पर पड़ी जो घिसटते हुए चले आ रहे थे। दोनों भाइयों को देख वह खिलखिला कर हंस पड़ी। जमींदार समेत सारे लोग भी खिलखिलाकर हंस पड़े।

जमींदार के आदेश पर दोनों को मंच के पास लाया गया। जमींदार ने दोनों से खेल शुरू करने को कहा परन्तु जमींदार को यह जान आश्चर्य हुआ कि वे दोनों तमाशा दिखाने नहीं बल्कि देखने आए हैं। कपड़ों की तंगी ने ही दोनों को सभी की हंसी का पात्र बना दिया। जमींदार बोला- खैर तुमने हमारी बेटी को हंसाया है इसलिए जो चाहो वह मांग लो। यह सुनकर दोनों ने एक दूसरे को देखा। फिर देखा अपने छिले हुए घुटनों, बिखरे बालों को। और इन सबके लिए जिम्मेदार पाया अपने पाजामे को। अतः शरमाते हुए दोनों बोले- हुजूर हमें दे दिया जाए एक और नया पाजामा।

- दुर्गेश टिंकर

'महापुरुषों की प्रेरणा में युवा भारत'



जहाँ हो घना अंधकार, वहाँ दीपक जलाएँगे,
हर दिल में उम्मीद के नये गीत सुनाएँगे।
जो गिरे, फिर उठ खड़े होंगे,
हर राह अपनी मंजिल बनाएंगे।

मालवीय ने शिक्षा का दिया उजाला,
जिससे खिली भारत की हर पीड़ित नारी प्यारा।
एम.एन.आई.टी. धरती पर युवा पढ़ रहे हैं,
तकनीक से देश का भविष्य संवार रहे हैं।

गांधी ने दिखाई सत्य और अहिंसा की राह,
जहाँ सरलता में छुपा है सबसे बड़ा सच।
'खुद बनो वो बदलाव जो देखना चाहते हो,
उनका संदेश आज भी दिल को छू जाता है।

सर सी.वी. रमन की खोजों ने दिया मान,
भारत को विज्ञान के मानचित्र पर स्थान।
उनके ज्ञान से हम आगे बढ़ें,
नई ऊँचाइयों को छूने की चाह रखें।

कलाम ने सिखाया सपनों को सच करना,
तकनीक से देश को नई दिशा देना।
युवा जोश के संग विज्ञान को अपनाओ,
भारत को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाओ।

फुले ने खोली शिक्षा की वो नई खिड़की,
जहाँ स्त्री और दलितों को मिली शक्ति।
सावित्रीबाई ने दिखाया ये साफ़,
हर मन में उजियाला होता है जागरूप।

बाबा साहेब अंबेडकर की आवाज़
आज भी गूँजती है,
'शिक्षा से टूटें सारे बंधन।'
उनके विचार हमें आगे बढ़ाते हैं,
अंधकार से उजाले की ओर ले जाते हैं।

सरदार पटेल ने देश को जोड़ा मजबूती से,
एक सूत्र में बांधा एकता की डोर से।
उनकी दृढ़ता से हम सीखें संगठित होना,
सभी बाधाओं को पार करना।

भगत सिंह की बहादुरी और
बलिदान की मिसाल,
उनके साहस से हमें सीख मिलती बेहिसाब।
स्वतंत्रता संग्राम के
शहीदों की अनगिनत कहानी,
देशभक्ति से भरी,
अमिट और महान निशानी।

महाराणा प्रताप की वीरता और जज्बा,
देशभक्ति की मिसाल हर दिल में समाया।
उनकी शौर्य गाथा से हम निडर बनें,
हर मुश्किल को साहस से जीतें।

स्वामी विवेकानंद ने जगाई चेतना की ज्वाला,
'उठो, जागो, और तब तक मत रुको जब तक
लक्ष्य न पाया।'
उनकी आग सी वाणी से हमें मिले ऊर्जा,
हर युवा के दिल में भर दे नई जोश की धारा।

अब हम चलेंगे उस राह पर,
जहाँ मेहनत, ईमानदारी और जुनून का हो
नया सफर।
अभिलाष के शब्दों में है जीवन का प्रकाश,
हर दिल को मिले नयी प्रेरणा की आस।

- अभिलाष बिष्ट, शोधार्थी

साँच को क्या आँच है

साँच को क्या आँच है,
यह तो साफ जैसे काँच हैं,
सत्य के प्रकाश के वशिभूत,
असत्य हो जाता है नैस्तनाबूत।।

सच की यदगार है,
सत्य रूपी तलवार है,
फिर युद्ध हो चाहे जो भी,
सत्य के विजय की दरकार है।।

सत्य का प्रकाश है,
सत्यवादियों का आकाश है,
सत्य के समक्ष मानो,
असत्य का विनाश है।।
मिथ्या के जन- जाल में,
फंसा जो आज है,
जो न निकला अब,
उसका सर्वनाश है।।

सत्य की आधार शिला पर,
जीवन रूपी भवन बनाना हमें आज है,
जो न अपना सका इस पाठ को
सदैव पराजय उसकी बरकरार है।
तो आओ मिलकर सत्यशोधक बने,
सत्यवान बन सत्य की लौ जलाएँ,
चहूँ ओर सत्य रूपी प्रकाश फैलाएँ,
ताकि असत्य अपने पैर न पसार पाए।।

संकलनकर्ताः राज कुमार व्यास

अजब विडंबना है

अजब विडंबना है ना, मरघट मे जाकर लोग
सौसौ आँसु बहाते है, फिर पता नहीं क्यों,
मृत्यु के करीब जाने की खुशी मानते है ।।

विचार थोड़े बाघी तो है
पर सत्यता से मेल तो खाते है,
आज एक प्रश्न उठा हृदय मे,
आखिर लोग जन्मदिन मानते क्यों है।।

शायद, इस क्षणभंगुर बुलबुले
की अमरता का प्रदर्शन करनी को,
या हो सकता है ईश्वर की
अशीम कृपा का दर्शन करने को।।

जब तक उत्तर दुसरा है ,
तब तक तो किंचित मंजूर है,
परन्तु अगर उत्तर दूसरा है
तोह संतान की बात जरूर है

व्यंजन खाते और खिलाते
खुद सजते अपनों को सजाते
परन्तु असलियत में तो
अपने वृद्धावस्था की ओर जाने का जश्न मनाते।।
जन्मदिन है तो उसकी खुशी मनायें पर
उस दिन अपने अहंकार का दान करें
दूसरों के कष्टों का निदान करें
अपने राष्ट्र समाज और स्वयं की उन्नति का इंतजाम करें

- स्वप्निल भारती
बी.टेक, तृतीय समेस्टर, यांत्रिकी अभियांत्रिकी

त्याग की भावना रखिये

विनोद हाईवे पर गाड़ी चला रहा था। सड़क के किनारे उसे एक 12-13 साल की लड़की तरबूज बेचती दिखाई दी। विनोद ने गाड़ी रोक कर पूछा ''तरबूज की क्या रेट है बेटा?'' लड़की बोली 50 रुपये का एक तरबूज है साहब।

पीछे की सीट पर बैठी विनोद की पत्नी बोली ''इतना महंगा तरबूज नही लेना जी। चलो यहाँ से। ''विनोद बोला'' महंगा कहाँ है इसके पास जितने तरबूज है कोई भी पांच किलो के कम का नही होगा। 50 रुपये का एक दे रही है तो 10 रुपये किलो पड़ेगा हमें। बाजार से तो तू बीस रुपये किलो भी ले आती है।'' विनोद की पत्नी ने कहा तुम रुको मुझे मोल भाव करने दो। ''फिर वह लड़की से बोली'' 30 रुपये का एक देना है तो दो वरना रहने दो। ''लड़की बोली 40 रुपये का एक तरबूज तो मै खरीद कर लाती हूँ आंटी। आप 45 रुपये का एक ले लो। इससे सस्ता मै नही दे पाऊँगी।''

विनोद की पत्नी बोली ''झूठ मत बोलो बेटा। सही रेट लगाओ देखो ये तुम्हारा छोटा भाई है न? इसी के लिए थोड़ा सस्ता कर दो।'' उसने खिड़की से झाँक रहे अपने चार वर्षीय बेटे की तरफ इशारा करते हुए कहा। सुंदर से बच्चे को देख कर लड़की एक तरबूज हाथों मे उठाते हुए गाड़ी के करीब आ गई। फिर लड़के के गालों पर हाथ फेर कर बोली सचमुच मेरा भाई तो बहुत सुंदर है आँटी। विनोद की पत्नी बच्चे से बोली दीदी को नमस्ते बोलो बेटा। बच्चा प्यार से बोला नमस्ते दीदी। लड़की ने गाड़ी की खिड़की खोल कर बच्चे को बाहर निकाल लिया फिर बोली तुम्हारा नाम क्या भैया?

लड़का बोला मेरा नाम गोलू है दीदी। बेटे को बाहर निकालने के कारण विनोद की पत्नी कुछ असहज हो गई। तुरंत बोली अरे बेटा इसे वापस अंदर भेजो। इसे डस्ट से एलर्जी है। लड़की उसकी आवाज पर ध्यान न देते हुए लड़के से बोली तु तो सचमुच गोल मटोल है रे भाई। तरबूज खाएगा? लड़के ने हाँ मे गर्दन हिलाई तो लड़की ने तरबूज उसके हाथों मे थमा दिया। पाँच किलो का तरबूज गोलू नही संभाल पाया। तरबूज फिसल कर उसके हाथ से नीचे गिर गया और टूट कर तीन चार टुकड़ों मे बंट गया। तरबूज के गिर कर टूट जाने से लड़का रोने लगा। लड़की उसे पुचकारते हुए बोली अरे भाई रो मत। मै दूसरा लाती हूँ। फिर वह दौड़कर गई और एक और बड़ा सा तरबूज उठा लाई। जब तक वह तरबूज उठा कर लाई इतनी देर मे विनोद की पत्नी ने बच्चे को अंदर गाड़ी मे खींच कर खिड़की बन्द कर ली। लड़की खुले हुए शीशे से तरबूज अंदर देते हुए बोली ले भाई ये बहुत मीठा निकलेगा। विनोद चुपचाप बैठा लड़की की हरकतें देख रहा था।

विनोद की पत्नी बोली जो तरबूज फूटा है मै उसके पैसे नही दूँगी। वह तुम्हारी गलती से फूटा है। लड़की मुस्कराते हुए बोली उसको छोड़ो आंटी। आप इस तरबूज के पैसे भी मत देना। ये मैने अपने भाई के लिए दिया है।

इतना सुनते ही विनोद और उसकी पत्नी दोनों एक साथ चौंक पड़े। विनोद बोला नही बिटिया तुम अपने दोनों तरबूज के पैसे लो। फिर सौ का नोट उस लड़की की तरफ बढ़ा दिया। लड़की हाथ के इशारे से मना करते हुए वहाँ से हट गई और अपने बाकी बचे तरबूजों के पास जाकर खड़ी हो गई।

विनोद भी गाड़ी से निकल कर वहाँ आ गया था। आते ही बोला पैसे ले लो बेटा वरना तुम्हारा बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा। लड़की बोली माँ कहती है जब बात सम्बन्धों की हो तो हानि लाभ नही देखा जाता। आपने गोलू को मेरा भाई बताया मुझे बहुत अच्छा लगा। मेरा भी एक छोटा सा भाई था मगर विनोद बोला क्या हुआ तुम्हारे भाई को?



वह बोली जब वह दो साल का था तब उसे रात मे बुखार हुआ था। सुबह माँ हॉस्पिटल मे ले जा पाती उससे पहले ही उसने दम तौड़ दिया था। मुझे मेरे भाई की बहुत याद आती है। उससे एक साल पहले पापा भी ऐसे ही हमे छोड़ कर गुजर गए थे।

विनोद की पत्नी बोली ले बिटिया अपने पैसे ले ले। लड़की बोली पैसे नही लूंगी आंटी।

विनोद की पत्नी गाड़ी मे गई फिर अपने बैग से एक चांदी की पायजेब की जोड़ी निकाली। जो उसने अपनी आठ वर्षीय बेटी के लिए आज ही खरीदी थी। लड़की को देते हुए बोली। तुमने गोलू को भाई माना तो मै तुम्हारी माँ जैसी हुई ना। अब तू ये लेने से मना नही कर सकती। लड़की ने हाथ नही बढ़ाया तो उसने जबरदस्ती लड़की की गोद मे पायजेब रखते हुए कहा इसे रख लो। जब भी तुम इसे पहनोगी तुम्हें गोलू की याद आयेगी। इतना कहकर वह वापस गाड़ी मे जाकर बैठ गई।

फिर विनोद ने गाड़ी स्टार्ट की और लड़की को बाय बोलते हुए चल पड़ा। विनोद गाड़ी चलाते हुए सोच रहा था कि भावुकता भी क्या चीज है। कुछ देर पहले उसकी पत्नी दस बीस रुपये बचाने के लिए हथकण्डे अपना रही थी। कुछ देर मे ही इतनी बदल गई जो पायजेब दे आई। फिर अचानक विनोद को लड़की की एक बात याद आई सम्बन्धों में हानि लाभ नही देखा जाता। विनोद का प्रॉपर्टी के विवाद को लेकर अपने ही बड़े भाई से कोर्ट मे मुकदमा चल रहा था। उसने तुरंत अपने बड़े भाई को फोन मिलाया। फोन उठाते ही बोला भैया मै विनोद बोल रहा हूँ। भाई बोला फोन क्यों किया? विनोद बोला भैया आप वो मैन मार्केट वाली दुकान ले लो। मेरे लिए मंडी वाली छोड़ दो। और वो बड़े वाला प्लॉट भी आप ले लो। मै छोटे वाला ले लूंगा। मै कल ही मुकदमा वापस ले रहा हूँ। सामने से काफी देर तक आवाज नही आई। फिर उसके बड़े भाई ने कहा इससे तो तुम्हे बहुत नुकसान हो जाएगा छोटे? विनोद बोला भैया आज मुझे समझ मे आ गया है सम्बन्धों में हानि लाभ नही देखा जाता। एक दूसरे की खुशी देखी जाती है। उधर से फिर खामोशी छा गई। फिर विनोद को बड़े भाई की रोने की आवाज सुनाई दी।

विनोद बोला रो रहे हो क्या भैया? बड़ा भाई बोला इतने प्यार से पहले बात करता तो सब कुछ मै तुझे दे देता रे। अब घर आ जा। दोनों प्रेम से बैठ कर बंटवारा करेंगे। इतनी बड़ी कड़वाहट कुछ मीठे बोल बोलते ही न जाने कहाँ चली गई थी। कल जो एक एक इंच जमीन के लिए लड़ रहे थे वे आज एक दूसरे को सब कुछ देने के लिए तैयार हो गए थे।

कहानी का सार : त्याग की भावना रखिये। अगर हमेशा देने को तत्पर रहोगे तो लेने वाले का भी हृदय परिवर्तन हो जाएगा। याद रखें सम्बंधों में हानि लाभ नही देखा जाता। अपनों को निकट रखने के लिए अपना अधिकार छोड़ना पड़ता है।

संकलन कर्ता- डॉ. देवयानी जोशी

सफल जीवन



हम जानते हैं कि मनुष्य के जीवन की विकास के आधार पर चार अवस्थाएँ होती हैं। (i) बाल्यावस्था (ii) किशोरावस्था (iii) यौवनावस्था (iv) वृद्धावस्था, प्रत्येक अवस्था में मनुष्य अपनी सफलता को एक अलग अंदाज में देखता है। बाल्यावस्था में बालक अपनी माँ के प्यार से, खिलौनों को देखने एवं खेलने से, छोटेछोटे सुखों जैसे पशु, पक्षी, जीवजन्तुओं के साथ समय व्यतीत करके, रोरो कर माँ से अपनी बात मनवाकर अपने आप को खुश होता है। जैसेमानो संसार की सारी खुशी उसे मिल गई हो।

किशोरावस्था में मनुष्य के जीवन में शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक परिवर्तन तेजी से होते हैं। इस अवस्था में व्यक्ति में नई सोच और स्वतंत्रता की भावना प्रबल होती है। वह अपने परिवारजनों एवं समाज का पूर्णतः विरोधी होता है, एवं मित्रों को सारी दुनिया मानता है। इस अवस्था में व्यक्ति अपनी पढ़ाई पर अधिक ध्यान देता है, जब उसे परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होते हैं, किसी प्रतियोगी परीक्षा में 90% से अधिक अंक प्राप्त करना, अच्छे संस्था में प्रवेश मिलना, ये उसकी खुशी के कारक होते हैं, यौवनावस्था में व्यक्ति अपने पैरों पर खड़े होकर अपने कर्तव्यों ,जीवन की जिम्मेदारियों के प्रति सजग होता है। यह जीवन का आधारभूत समय होता है जिसमें व्यक्ति शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक दृढ़ता एवं शिक्षा के लिए आत्मजागरूक होता है। वह अपने का बोझ अपने कंधों पर लेकर चलता है। इस दौरान व्यक्ति अपने आप को इस अवस्था में खुश एवं सफल महसूस करता है।

चतुर्थ अवस्था 'वृद्धावस्था' में व्यक्ति अपने परिवारजनों से प्रेम को कम करके परमपिता परमात्मा के प्रति प्रेम करने लगता है। इस अवस्था में व्यक्ति अनुभव, ज्ञान एवं जीवन के अनेक सीखों से समृद्ध हो चुका होता है। यह अवस्था बाल्यावस्था के समकक्ष है, क्योंकि इस अवस्था में व्यक्ति बच्चों की भाँति छोटेछोटे खुशी के पल जिन्दगी में देखता है। एवम् छोटेछोटे बच्चों के साथ समय बिताकर अपने मन को बहलाता है। बाल्यावस्था से भिन्न यह होता है, कि यहाँ व्यक्ति समझदार, परिपक्व एवं अनुभवजन्य होता है।

अतः उपयुक्त चारों अवस्थाओं में व्यक्ति के जीवन के खुशियों के पल को दर्शाया गया है। दरअसल ये अनुभूतियाँ ही व्यक्ति के सफल जीवन की निर्माण करती हैं। सफल जीवन का तात्पर्य यह नहीं होता कि व्यक्ति के पास धन, पद, प्रतिष्ठा या मानसम्मान एवं शोहरत है। बल्कि इन्हें अपने जीवन के खुशी के पल मानते हुए अपनी ईमानदारी से कमाई हुई प्रसिद्धि मानकर जीवन का एक छोटा हिस्सा मानना चाहिए। यदि ये चीजें किसी गलत तरीके से व्यक्ति के पास आ जाती हैं एवं किसी अन्य व्यक्ति की भावना को ठेस पहुँचाती है या जीने नहीं देती है तब ये खुशियाँ व्यर्थ जीवन का हिस्सा होती हैं। 'सफल जीवन केवल धन से नहीं उसके कर्मों से बनता है।' 'मेहनत, धैर्य एवं विश्वास ये तीनों मिलकर सफल जीवन की नींव रखते हैं।

– सुधांशु अवस्थी (2025PMA5415)

भारतीय दृष्टि में नारी चिंतन: नारी से नारायणी तक की यात्रा



भारतीय संस्कृति में नारी केवल समाज का एक अंग नहीं, बल्कि संपूर्ण सृष्टि की सृजनशक्ति है। भारतीय मनीषा ने नारी को कभी केवल अधिकारों अथवा दायित्वों के आधार पर नहीं आँका, बल्कि उसे जीवन, संस्कृति, करुणा, शक्ति और ज्ञान की अधिष्ठात्री के रूप में प्रतिष्ठित किया है। इसी कारण भारतीय परंपरा में नारी के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव केवल सामाजिक व्यवस्था नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन का आधार रहा है।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।'' यह उद्घोष केवल एक धार्मिक वाक्य नहीं, बल्कि भारतीय समाज की उस सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है जिसमें नारी को सृजन और संवर्धन की मूल शक्ति माना गया है। भारतीय चिंतन में नारी ''अबला'' नहीं, बल्कि 'शक्ति' है; वह केवल परिवार का आधार नहीं, बल्कि राष्ट्रजीवन की आत्मा है। 'भारतीय दृष्टि में नारी चिंतन' के संपादन के दौरान अनेक विद्वानों, शिक्षाविदों, संतों, चिंतकों तथा समाज जीवन से जुड़े व्यक्तित्वों के विचारों का अध्ययन करने का अवसर मिला। इन विविध दृष्टिकोणों का सार यही है कि भारतीय नारी का व्यक्तित्व अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। वह माता है तो प्रथम गुरु भी है; वह गृहिणी है तो संस्कृति की संरक्षिका भी; वह विदुषी है तो समाज को दिशा देने वाली नेतृत्वकर्ता भी।

भारतीय इतिहास ऐसे असंख्य उदाहरणों से भरा पड़ा है जहाँ नारियों ने अपने ज्ञान, त्याग, साहस और तपस्या से समाज को नई दिशा प्रदान की। वैदिक काल की गार्गी और मैत्रेयी ने ज्ञान की परंपरा को समृद्ध किया, माता सीता ने धैर्य और मर्यादा का आदर्श प्रस्तुत किया, माता अहिल्याबाई होल्कर ने आदर्श शासन का उदाहरण स्थापित किया, रानी लक्ष्मीबाई ने राष्ट्ररक्षा के लिए अद्वितीय वीरता दिखाई, जबकि राजस्थान की पन्नाधाय, रानी पद्मिनी, हाड़ी रानी और मीराबाई ने त्याग, स्वाभिमान, भक्ति और राष्ट्रनिष्ठा के ऐसे मानदंड स्थापित किए जो आज भी प्रेरणा के स्रोत हैं।

भारतीय दृष्टि नारी और पुरुष को प्रतिस्पर्धी नहीं मानती। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। समाज और परिवार की स्वस्थ संरचना तभी संभव है जब दोनों समान सम्मान, सहयोग और उत्तरदायित्व के साथ जीवन का निर्माण करें। यही भारतीय परिवार व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता रही है। आज आवश्यकता केवल नारी को अधिकार देने की नहीं, बल्कि उसके प्रति समाज की दृष्टि को भारतीय मूल्यों के अनुरूप पुनः जागृत करने की है। शिक्षा, संस्कार, आत्मविश्वास, सुरक्षा और नेतृत्व के अवसर उसके व्यक्तित्व के विकास के आधार हैं, किन्तु इन सबके साथ यह भी आवश्यक है कि समाज नारी को उसकी गरिमा, संवेदनशीलता और सृजनशीलता के साथ स्वीकार करे।

''भारतीय दृष्टि में नारी चिंतन'' का उद्देश्य किसी वैचारिक विवाद को जन्म देना नहीं, बल्कि भारतीय परंपरा में नारी के वास्तविक स्वरूप को समझने और समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास है। इस पुस्तक में संकलित विविध लेख यह स्पष्ट करते हैं कि भारतीय संस्कृति में नारी केवल पूजनीय नहीं, बल्कि सहभागी, प्रेरक, मार्गदर्शक और राष्ट्र निर्माण की केंद्रीय शक्ति है। ''नारी से नारायणी'' की यात्रा किसी अलौकिक परिवर्तन की नहीं, बल्कि उस अंतर्निहित दिव्यता के जागरण की यात्रा है जो प्रत्येक नारी में विद्यमान है। जब समाज उसे सम्मान, अवसर और विश्वास देता है, तब वही नारी परिवार को संस्कारित करती है, समाज को संगठित करती है और राष्ट्र को सशक्त बनाती है। यही भारतीय दृष्टि में नारी चिंतन का शाश्वत संदेश है।

- बिरेन्द्र पांडेय
संपादक, भारतीय दृष्टि में नारी चिंतन

ग़मे ज़िंदगी

मेरी नज़रों से गिरते जा रहे हैं
यही दौलत पे जो इतरा रहे हैं
कभी जो घर से निकले ही नहीं है
सलीकाऐसफर बतला रहे हैं
जिसे हम आज तक समझे नहीं हैं
ज़माने को वही समझा रहे हैं
रहा बरसों ठिकाना दिल में जिनका
मिलाने में नज़र कतरा रहे हैं
तुझे तन्हा समझता था मैं लेकिन
तिरे कहने से लश्कर आ रहे हैं
तू ने इतना सितम ढाया है मुझ पर
मुहब्बत नाम से घबरा रहे हैं
पुराने घाव को ताजा करेंगे
नमक जख्मों पे हम लगवा रहे हैं
गम ऐ दुनिया हमे तो रास आई
बिछड़ते वक्त भी मुस्कारा रहे हैं

- आकाश शर्मा
शोधार्थी - विद्युत अभियांत्रिकी

पिता से भूल



सुनो बेटे, यह बातें मैं तब कह रहा हूँ जब तुम सो रहे हो, एक छोटी-सी मुट्ठी तुम्हारे गाल के नीचे दबी है और माथे पर सुनहरे घुँघराले बाल पसीने से चिपके हुए हैं। मैं चुपके से अकेला तुम्हारे कमरे में आया हूँ।

कुछ ही देर पहले, जब मैं पुस्तकालय में बैठकर अखबार पढ़ रहा था, तभी पश्चाताप की एक उमड़ती हुई लहर मेरे भीतर से उठी। अपराध-बोध से भरा हुआ मैं तुम्हारे बिस्तर के पास चला आया हूँ । बेटे, मैं सोच रहा हूँ, आज मैं तुम्हारे साथ कितना कठोर रहा।

जब तुम स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहे थे, तब मैंने तुम्हें डाँटा, सिर्फ इसलिए कि तुमने चेहरे पर तौलिया बस एक बार फेरा था। फिर जूते साफ न करने के लिए भी झिड़का, कमरे में कुछ चीजें बिखेरने पर मैं जोर से चिल्लाया।

नाश्ते के समय भी मेरी शिकायतें बंद नहीं हुईं, तुमने कुछ गिरा दिया, खाना जल्दी-जल्दी निगल रहे थे, मेज पर कोहनी टिकाए बैठे थे, रोटी पर मक्खन मोटा लगा रहे थे। जब तुम खेलने के लिए निकले और मैं अपनी ट्रेन पकड़ने जा रहा था, तब तुमने पलटकर हाथ हिलाया और पुकारा 'अलविदा, पापा!' और मैंने भौंहें चढ़ाईं और बस इतना कहा, 'सीधे कंधे रखो!' फिर शाम को भी वही सिलसिला शुरु हो गया।

जब मैं सड़क से घर की ओर आ रहा था, तब देखा कि तुम घुटनों के बल बैठे कंचे खेल रहे हो। तुम्हारे मोजों में छेद थे। मैंने तुम्हारे दोस्तों के सामने तुम्हें शर्मिंदा किया और तुम्हें अपने आगे-आगे घर के भीतर धकेल दिया। मोजे महँगे आते हैं और अगर तुम खुद खरीदते, तो सँभालकर रखते! बेटे, यह सोचो, यह एक पिता ने कहा।

क्या तुम्हें याद है, बाद में जब मैं पुस्तकालय में पढ़ रहा था, तब तुम डरे सहमे से, आँखों में एक अजीब-सी चोट लिए, दरवाजे पर आकर खड़े हो गए? मैंने अखबार के ऊपर से नज़र उठाई, उस रुकावट से चिढ़ते हुए, और तुम दरवाजे पर ठिठक गए।

'क्या चाहिए तुम्हें?' मैंने झुँझलाकर कहा।

तुमने कुछ नहीं कहा। बस एक तूफानी दौड़ के साथ आगे बढ़े और मेरी गर्दन में बाहें डालकर मुझे चूम लिया। तुम्हारी नन्ही-नन्ही बाहें उस प्यार से कसी हुई थीं, जो ईश्वर ने तुम्हारे हृदय में खिलाया है, और जिसे मेरी उपेक्षा भी मुरझा न सकी। फिर तुम तेज कदमों से सीढ़ियाँ चढ़ते हुए चले गए।

बेटे, कुछ ही देर बाद अखबार मेरे हाथों से छूट गया और एक भयानक घबराहट मुझ पर छा गई। आदत ने मुझे क्या बना दिया है? दोष निकालने की, डाँटने की आदत, और यही मैंने तुम्हें दिया, सिर्फ इसलिए कि तुम एक बच्चे हो। इसलिए नहीं कि मैं तुमसे प्यार नहीं करता, बल्कि इसलिए कि मैं तुमसे बहुत अधिक उम्मीद रखता था। मैं तुम्हें एक बच्चे की नजर से नहीं, बल्कि एक बड़े इंसान की कसौटी पर तौल रहा था और तुम्हारे भीतर इतना भला, इतना कोमल है! तुम्हारा छोटा-सा दिल किसी सूर्योदय जितना विशाल है, पहाड़ों और समुद्रों जितना विस्तृत। तुमने मुझे अपनी बाहों में भर लिया, और मैंने तुम्हें इसकी माँग भी नहीं करने दी।

कोई भी बच्चा स्वाभाविक रूप से अच्छा होता है। बुरी आदतें, गलत व्यवहार, वे बाहर से आते हैं। मैंने तुम पर जो बोझ डाला, वह मेरी अपनी थकान और चिड़चिड़ेपन का था, तुम्हारी गलती नहीं। कल से नहीं, अभी से, मैं एक अच्छा पिता बनूँगा। जब तुम खेलो, मैं तुम्हारे साथ खेलूँगा। जब तुम दुखी हो, मैं तुम्हारी बात सुनूँगा। जब तुम हँसो, मैं भी हँसूँगा। और जब तुमसे कुछ गलत हो जाए, तो मैं याद करूँगा कि तुम एक बच्चे हो, बस एक छोटा-सा बच्चा। मैं तुमसे बड़े होने की माँग नहीं करूँगा। तुम अभी बस मेरे बेटे हो और मेरे लिए यही काफी है।

संकलन कर्ता- अक्षत शर्मा



बचपन और सपने

सपनों ने कुछ ऐसे दिल को छुआ,
पुरानी यादों से एक नया रिश्ता बुना।
मन करने लगा, काश लौट जाऊं उसी पार,
जहाँ था बचपन, जहाँ मिलते थे यार।
सोचा, बस यही सच है मेरा,
पर सुबह ने आकर,
इस सच को भी घेरा।
सपनों में क्यों आता है वो बीता कल?
शायद दिल को बहलाने का यही था कोई हल।
लौटते हुए एक ही सवाल था दिल में,
किस दाम पर बेच दिए बचपन के वो दिन?
कैसा था वो सपना, जो सब भुला गया,
हकीकत से भी ज्यादा सच्चा लगा।
याद है, वो कंचे की खनक,
सटोलिया की टक्कर,
कबड्डी में धूल,
क्रिकेट का हर चौका बेफिक्र।
छुपाकर टीवी देखना,
वो डर भी कितना प्यारा था,
चोर-पुलिस में दौड़ना,
बस एक आहट पर गायब हो जाना था।
नीम तले की छांव,
दोस्तों संग तितलियाँ पकड़ना,
वो शरारती लहरें, और पानी में उतरना।
स्कूल से भागते पांव, ना कोई फिक्र ,
ना कोई तनाव,
बस खुशियों का था दिल में हर बहाव।
पर अब सुबह की किरण ने डराकर बताया,
'उठो! तुम्हें तो जिम्मेदारियों के लिए बनाया।'
अब हर बिल की टेंशन,
हर EMI का हिसाब,
बचपन में सोचते थे बनेंगे नवाब!
वो बचपन की आज़ादी कहीं खो गई,
जवानी की इस दौड़ में साँसें थक गईं।
सोचा था बड़े होकर करेंगे राज,
पर यहाँ तो चल रहा है काम का ताज!
क्यों भूल जाते हैं हम वो पल,
जब सपने भी लगते थे सच।
जब उनका हिसाब किया, तो जाना,
बचपन का हर लम्हा था अनमोल खजाना।
उन दिनों से ही तो हमने सब सीखा है,
अतीत या भविष्य? सपना था, या सच?
सपने में तो हर पल अपना था।
मुझे तो उस मोड़ पर भी हंसी आई,
जब दोस्त छोड़ जाते थे अपना 'लंच' वहीं।

- गजेन्द्र शर्मा
विधार्थी, एम.एस.सी. भौतिक विज्ञान

ꕥ अकेले खड़े रहने का साहस रखो दुनियाँ ज्ञान देती है, साहस नहीं। ꕥ

प्रधान सम्पादकः आचार्य (डॉ.) ज्योति जोशी, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर, मालवीय नगर, जयपुर-302017, सदस्य संपादक मंडल : डॉ. राजकुमार व्यास (समन्वयक, राजभाषा), डॉ. ऋषी तिवारी (सह-समन्वयक, राजभाषा), श्री बीरेन्द्र पाण्डेय (वरिष्ठ कार्य सहायक, केन्द्रीय पुस्तकालय) • फोन : 9413971604, ई-मेल : malaviyaprakash.lokmat@gmail.com
लेजर टाईप सैटिंग एवं मुद्रण स्थल : द् प्रिण्ट पैलेस, कैलगिरी रोड, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 0141-4002016 • www.theprintpalace.com